बी0 ए0, खण्ड–।
अर्थशास्त्र (सम्मान)
प्रथम पत्र

डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo. Com

'उपयोगिता का अर्थ एंव विशेषताएँ

'उपयोगिता किसी वस्तु की वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करती है। उपयोगिता की उपस्थिति जब किसी वस्तु में आवश्यकता संतुलन करने की शक्ति होती है तो उसमें उपयोगिता होती है, भले ही उस वस्तु से उपभोक्ता उससे नुकसान क्यों न हो रहा हो। यथा, नशीले पदार्थो को सामान्यतः अनुपयोगी माना जाता है। लेकिन अर्थशास्त्र की भाषा में ये उपयोगी अर्थात् उपयोगिता रखते हैं कारण कि ये उपभोक्ता की आवश्यकताओं का संतुष्टि करते है।

'प्रो0 बाध' के अनुसार, 'अर्थशास्त्री के लिए उपयोगिता, आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता है।

'प्रो0 एडवर्ड नेविन' के अनुसार, 'अर्थशास्त्र में उपयोगिता का अर्थ उस संतुष्टि या आनंद या लाभ से है, जो किसी व्यक्ति को धन या संपति के उपयोग से प्राप्त होता है।'

'उपयोगिता की प्रमुख विशेषताएँ'

1. उपयोगिता एक सापेक्षिक शब्द है।
2. उपयोगिता का संबंध कल्याण (हितकारिता) से नहीं है।
3. उपयोगिता का कोई खास भौतिक रूप नहीं है।
4. यह वास्तविक उपभोग पर निर्भर नहीं करता है।
5. यह आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है।
6. उपयोगिता त्याग के बिना अंसंभव है।

'उपयोगिता को मापने संबंधी अवधारणायें'

किसी चीज की उपयोगिता की माप के संबंध में प्रमुख दो विचारधाराऐं प्रचलित हैं:
(क) मार्शल का गुणवाचक दृष्टिकोण
(ख) पैरेटो, हिक्स का क्रमवाचक दृष्टिकोण

(क) मार्शल का गुणवाचक दृष्टिकोणः प्रो0 मार्शल ने उपयोगिता को द्रव्य के माध्यम से मापने की बात कही है। उनके अनुसार, उपयोगिता की गणना संख्याओं में यथा, 1,2,3,4,5,6, आदि मं की जा सकती है। उन संख्याओं से यह स्पष्ट होता है कि संख्या 5 संख्या 1 से पॉच गुना बड़ी है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'मार्शल का दृष्टिकोण गुणवाचक है।

इस प्रकार, उपयोगिता को मापने के संबंध में मार्शल ने उपयोगिता को द्रव्य के पैमाने से मापने के सन्दर्भ में कहा है कि किसी वस्तु की ईकाई के उपयोग से वंचित रहने की और उस वस्तु की ईकाई लिए जितना मूल्य देने की तत्परता रहती है – – वही उस वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता की माप है। अतः मार्शल के कथानुसार,व्यक्ति जिस वस्तु के उपयोग के लिए जितना अधिक द्रव्य देने की तत्परता रखता है, उसे उस वस्तु से उतनी ही अधिक उपयोगिता मिलेगी।

'गुणवाचक दृश्टिकोण' से उपयोगिता को दो तरीके से मापा जा सकता है।

1. मुद्रा के रूप में मापः यदि कोई एक उपभोक्ता, एक अण्डा के लिए एक रूपया देता है तो उसके लिए अण्डा की उपयोगिता एक रूपया के बराबर रहेगी। अतः उपयोगिता का मापन गुणवाचक है।
2. इकाइयो के रूप में मापः प्रो0 फीशर' ने उपयोगिता की माप के लिए यूटिल शब्द का उपयोग किया है। इसके अंतर्गत उपयोगिता को यूटिल में स्पष्ट किया जाता है कि उदाहरणार्थ 'ए' व्यक्ति को चाय के प्याले से 10 यूटिल उपयोगिता प्राप्त होती है – वही 'वी' व्यक्ति को उसी प्याले से 5 या 7 युटिल उपयोगिता मिल सकती है। इस प्रकार, उपयोगिता को संख्यात्मक रूप से गिना जा सकता है, जोड़ा या घटाया जा सकता है, आपस में तुलना भी की जा सकती है।